मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR

SYLLABUS FOR RESEARCH ENTRANCE TEST

विषयः प्राकृत एंव जैन विद्या

इकाई–1: प्राकृत भाषा का इतिहास : उत्पत्ति एवं विकास

1. वैदिक (छान्दस्) साहित्य में प्राकृत भाषा के तत्त्व
2. प्राकृत भाषा के प्राचीनतम स्त्रोत
3. प्राकृत भाषा का विकास :

प्रथम युगीन प्राकृत 1. अभिलेखीय प्राकृत, निया प्राकृत एवं प्राकृत धम्मपद
2. प्राकृत अंग आगम ग्रन्थों का भाषात्मक परिचय
3. कसायपाहुड, षट्खण्डागम एंव आचार्यकुन्दकुन्द के ग्रन्थों का भाषात्मक परिचय

द्वितीय युगीन प्राकृत 1. उंपाग एवं मूलसूत्र ग्रन्थो की भाषा : औपपातिक, राजप्रश्त्रीय, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन
2. मूलाचार, भगवती आराधना एवं तिलोयपण्णत्ति का भाषात्मक परिचय
3. गाथासप्तशती, पउमचरियं, वसुदेवहिण्डी का परिचय एवं उनकी भाषा

अर्वाचीन प्राकृत– 1. आगमिक् व्याख्या साहित्य : धवला, जयधवला, सुखबोधाटीका एंव शीलांककृत सूत्रकृतांग टीका की भाषा का परिचय।
2. सेतुबन्ध, गउडबहो, लीलावईकहा, हरिभद्रसूरि के प्राकृत ग्रन्थों एवं कुवलयमाला कहा का भाषात्मक परिचय
3. अपभ्रंश भाषा के स्त्रोत–जोइन्दु, स्वयंभू, पुष्पदन्त की कृतियों की अपभ्रंश भाषा तथा हेमचन्द्रकृत प्राकृत व्याकरण में उद्धृत अपभ्रंश दोहों का अध्ययन

4. आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में प्राकृतों का योगदान :
हिन्दी एवं अन्य प्रान्तीय भाषाएँ

इकाई 2: विभिन्न प्राकृतों की उत्पत्ति एवं प्रमुख विशेषताएँ

1. महाराष्ट्री
2. शौरसेनी
3. अर्धमागधी
4. मागधी
5. पैशाची
6. अपभ्रंश

इकाई 3: प्राकृत आगम एवं व्याख्या साहित्य

1. अर्धमागधी एवं शौरसेनी आगम साहित्य का इतिहास
2. आगमिक व्याख्या साहित्य का इतिहास
3. समणसुत्तं का सामान्य परिचय

इकाई 4: प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

1. महाकाव्य
2. खण्डकाव्य
3. चरितकाव्य

4. कथाकाव्य
5. चम्पूकाव्य
6. मुक्तककाव्य

इकाई 5: प्राचीन नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत एवं सट्टक साहित्य

1. अश्वघोष एवं भास के नाटकों की प्राकृत
2. मृच्छकटिक, मुद्राराक्षस तथा कालिदास के नाटकों की प्राकृत भाषा
3. सट्टक साहित्य का वैशिष्टय

इकाई 6: प्राकृत शिलालेखीय साहित्य

1. सम्राट अशोक के 14 गिरनार शिलालेखों का अध्ययन
2. सम्राट् खारवेल के हाथीगुंफा शिलालेख का अध्ययन
3. कक्कुक के घटियाल शिलालेख का अध्ययन

इकाई 7: प्राकृत लाक्षणिक साहित्य

1. अलंकार शास्त्र
2. कोश शास्त्र
3. प्राकृत के प्रमुख ज्योतिष एवं गणित विषयक ग्रन्थ
4. प्राकृत वैयाकरण एवं उनके ग्रन्थ
5. वृत्त (छन्द) शास्त्र
6. प्राकृत एवं अपभ्रंश के प्रमुख छन्दो का सोदाहरण लक्षण –
   प्राकृत छन्द– गाहा, पत्था, विउला, उग्गाहा, गाहू, सिंहिणी, गाहिणी, खंधअ
   अपभ्रंश के छन्द– दुवई, कडवअ, घत्ता, पज्झडिआ, हेला, चउपाइया।

इकाई 8: प्राकृत व्याकरण एवं भाषा तत्त्व

1. प्राकृत व्याकरण – संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय, कारक, कारक–विभक्तियाँ, संधि एवं समास के सोदाहरण सामान्य नियमों का अध्ययन
2. भाषातत्त्व – ध्वनि–परिवर्तन : स्वर–व्यजंन, 'य' श्रुति, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग;
   ध्वनितात्विक व्यवहार : समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति, व्यत्यय, लोप, आगम आदि।

इकाई 9: प्राकृत के मूलग्रन्थों का अध्ययन

1. आचारांग (प्रथम श्रुतस्कंध : प्रथम अध्ययन – सत्यपरिण्णा एंव द्वितीय अध्ययन – लोगविजय)
2. उत्तराध्ययन (प्रथम अध्ययन –विणयसुयं एवं नवम अध्ययन – नमिपवज्जा)
3. दशवैकालिकसूत्र (1, 2, 3 एवं 4 अध्ययन)
4. प्रवचनसार (कन्दकुन्दाचार्य) : (प्रथम ज्ञानाधिकार)
5. सम्मइसुत्तं (सिद्धसेन) सम्पर्ण
6. द्रव्य–संग्रह (नेमिचन्द्र) सम्पर्ण
7. भगवती आराधना–शिवार्यकृत (प्रथम 1 से 72 गाथाएँ)
8. वसुनन्दिश्रावकाचार (प्रथम 1 से 50 गाथाएँ एवं सप्त–व्यसन विषयक 60–87 तथा 101–111 गाथाएँ)

इकाई 10: प्राकृत के मूल काव्य–ग्रन्थों का अध्ययन

1. मृच्छकटिक (शूद्रक) केवल प्राकृत भाग (1, 2 एवं 6 वें अंक का प्राकृत भाग)
2. सेतुबंध (प्रवरसेन) प्रथम आश्वास
3. वज्जालग्गं (जयवल्लभ) प्रथम आठ वज्जाएँ : सोयार, गाहा, कव्व, सज्जण, दुज्जण, मित्त, नेह एवं नीइवज्जा
4. गाहासत्तसई (हाल) प्रथम शतक की 1–50 गाथाएँ
5. समराइच्चकहा (प्रथम भव)
6. कुवलयमालाकहा (उद्द्योतनसूरि) अनुच्छेद 1 से 12
7. कर्पूरमंजरी (राजशेखर) सम्पर्ण
8. पउमचरिउ (स्वयंभू) 21वीं एवं 22वीं सन्धि
9. णायकुमारचरिउ (पुष्पदंत) प्रथम सन्धि
10. प्राकृत के आधुनिक काव्य–ग्रन्थों का सामान्य परिचयः
    1.रयणवालकहा
    2.भावणासारो
    3.विरागसेतु
    4.तित्थयर–भावणा

इकाई 11: जैन धर्म का इतिहास

1. जैन धर्म का इतिहास : कालचक्र एवं तीर्थकर परम्परा–भगवान ऋषभदेव, पार्श्वनाथ एवं महावीर का जीवन चरित।
2. जैन सम्प्रदाय एवं भेद : दिगम्बर एवं श्वेताम्पर तथा उनके उपसम्प्रदाय।
3. णमोकार महामन्त्र, पंचपरमेष्ठ, प्रार्थना–भक्ति–उपासना; रत्नत्रय : सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चरित्र।
4. प्राकृत का प्रमुख आगम एवं वाचनाएँ।
5. जैन धर्म के प्रमुख आचार्य : आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य उमास्वामि (ति), आचार्य सिद्धसेन, आचार्य अकलंक स्वामी, आचार्य हरिभद्रसूरि, आचार्य वीरसेन स्वामी, आचार्य जिनसेन, आचार्य हेमचन्द्रसूरि एंव आचार्य यशोविजय का व्यक्ति एवं रचनाएँ।

इकाई 12: जैन आचार एवं दर्शन

1. व्रतः श्रावको के व्रत–अणुव्रत, गुणव्रत एवं शिक्षाव्रत, श्रमणों के महाव्रत–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, बह्मचर्य और अपरिग्रह महाव्रम।
2. साततत्त्व एंव षट्द्रव्य, कर्म सिद्धान्त और उसके भेद; पुरूषार्थ
3. ज्ञान की अवधारणा एवं उसके भेद।
4. अनेकान्तवाद एवं स्याद्वाद, जैनयोग एवं ध्यान
5. जैन धर्म में मोक्ष की अवधारणा।

इकाई 13: जैन कला एवं समाज

1. जैनशिल्प एवं स्थापत्य : दक्षिण भारत की जैन गुफाएँ एवं मन्दिर, खजुराहो, देवगढ़ पालिताना, माउण्ट–आबू के प्रमुख जैन मन्दिर।
2. जैन मूर्तिकला चित्रकला एवं प्रतिमाविज्ञान : भारत में प्राप्त प्रमुख जैन मूर्तियाँ, श्रवणबेलगोला एवं मथुरा से प्राप्त प्रतिमाएँ।
3. जैन धर्म का समान पर प्रभाव : शाकाहार एवं दान। जैन धर्म में नारी का स्थान।
4. जैन धर्म मे पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय चिन्तन; जैन धर्म और विज्ञान।
5. जैन शिक्षा के प्रमुख केन्द्र : श्रवणबेलगोला, जैसलमेर, अहमदाबाद, वाराणसी, वैशाली, कोबा, लाडनूं, जयपुर, दिल्ली। विदेशो में जैन धर्म।